nwda.gov.in

जलवायु परिवर्तन व हीट आइलैंड से बिगड़ा मौसम का मिजाज

जागरण विमर्श

मई में मौसम बना पहेली इस बदले स्वरूप के क्या हैं कारण

स्वर्णिम प्रभात ● जागरण

नई दिल्ली : मई में तापमान पिछले कुछ सालों की अपेक्षा कम रहा है। इस माह में तापमान मुख्य रूप से गतिशील रहता है, लेकिन इस बार समय-समय पर आंधी और तूफान के साथ-साथ वर्षा होने से तापमान के तेवर नरम है। आखिर ऐसा क्यों हो रहा है, इसके पीछे मुख्य कारण क्या हैं, इस पर चर्चा करने के लिए जागरण विमर्श में भारतीय मौसम विभाग के महानिदेशक डा. मृत्युंजय महापात्रा ने अपनी बात रखी। उन्होंने कहा कि इस बार मई में किसी विशेष क्षेत्र में ही वज्रपात, आंधी और वर्षा देखने को नहीं मिली बल्कि यह पूरे देश में आंधी, वर्षा और बिजली गिरने की घटना हुई। इसमें कहीं-कहीं नुकसान भी हुआ है। इसके पीछे जो मुख्य कारण जलवायु परिवर्तन और हीट आइलैंड हैं। एनसीआर में जगह-जगह हीट आइलैंड हैं जहां का तापमान अन्य जगह से अधिक होता है, क्योंकि वहां हरियाली कम होती है। ऐसी स्थिति में जब तापमान बढ़ता है तब वायुमंडल की निचली सतह का तापमान तो बढ़ता है, लेकिन ऊपरी सतह का तापमान इसके अनुरूप नहीं बढ़ता है। उसमें गिरावट देखने को मिलती है। ऐसे में हवा का दबाव कम हो जाता है। इस परिस्थिति में आर्द्रता में भी अप्रत्याशित वृद्धि होती है। एनसीआर में ऊंची-ऊंची इमारतों की वजह से हीट बढ़ने से आर्द्रता में वृद्धि होती है, जो वर्षा के कारण हैं। इस बार बंगाल की खाड़ी और अन्य तटीय क्षेत्रों में आर्द्रता के अधिक गतिशील होने से भी मौसम का ऐसा प्रारूप देखने को मिला। उन्होंने कहा कि अमूमन वातावरण में ऐसा परिवर्तन ठंड के दिनों में या फिर मानसून के समय देखने को मिलता है, लेकिन इस बार मई में ही ऐसा देखने को मिला।

बकौल महापात्रा, अगर हम एनसीआर की बात करें तो यहां यमुना बहती है और गर्मी बढ़ने पर आर्द्रता में भी वृद्धि होती है। उन्होंने कहा कि एक आकलन के अनुसार अगर एक डिग्री सेल्सियस तापमान में वृद्धि होती तो आर्द्रता में सात डिग्री की बढ़ोतरी होती है। यही कारण है कि जब तापमान के साथ-साथ आर्द्रता में भी वृद्धि हुई तो आंधी वर्षा के साथ-साथ कहीं-कहीं ओलावृष्टि भी हुई। अगर देखें तो पश्चिमी विक्षोभ, बंगाल की खाड़ी और अरब सागर दोनों से नमी के प्रवेश के कारण उत्तर-पश्चिम भारत में लगातार गरज के साथ वर्षा हुई है।

दिन और रात के तापमान में अंतर : डा. माहापात्रा ने कहा कि जब दिन और रात के तापमान में अंतर होता है तो भी ऐसी स्थिति उत्पन्न होती है। इस स्थिति में भी आर्द्रता में बढ़ोतरी होती है और तापमान अधिक रहने के कारण बादल बनता है और वर्षा होती है। साथ ही अगर कहीं हवा का दबाव कम है तो हवा की गति बढ़ती है, जो कभी-कभी आंधी की भी शक्ल ले लेती है। इस दौरान हवा की गति अमूमन 30 से 40 किमी, प्रति घंटे रहती है, लेकिन कभी-कभी इसकी गति 100 किमी. प्रति घंटे से भी ऊपर पहुंच जाती है जिस कारण जानमाल का नुकसान होता है। हालांकि इस बार मई में हवा की गति 100 किमी.प्रति घंटे से ऊपर नहीं गई है।

कृषि मंत्रालय के साथ मिलकर काम करने की योजना : उन्होंने कहा कि हमारे देश में एक समय पर अलग-अलग फसल की बिजाई व कटाई होती है, लेकिन मौसम में अचानक परिवर्तन के कारण हमारे किसानों को नुकसान होता है। ऐसे में हमलोग कृषि मंत्रालय के साथ योजना बना रहे हैं कि एक ऐसे माध्यम को विकसित किया जाए जिससे कि हम दो घंटे पहले उस क्षेत्र के किसानों को मौसम को लेकर अलर्ट कर सकें।

मौसम विभाग करता है सचेत

डा. महापात्रा ने कहा कि मौसम विभाग अपनी वेबसाइट, एप और प्रेस के माध्यम से भी पूर्वानुमान बताता है। उन्होंने कहा कि मौसम विभाग की वेबसाइट पर 100 दिनों के मौसम का पूर्वानुमान है, लेकिन जब कभी प्रबल पश्चिमी विक्षोभ का असर दिखता है तो उसकी चेतावनी भी जारी की जाती है। आप देश के किसी भी क्षेत्र के पिनकोड व पंचायत के नाम से भी अपने क्षेत्र के तापमान व मौसम की जानकारी ले सकते हैं।

डा. मृत्युंजय महापात्रा, महानिदेशक भारतीय मौसम विभाग ● जागरण

सूचना देरी से मिलती है

कभी -कभी ऐसा होता है कि मौसम में खराबी की सूचना हमें देरी से मिलती है। उदाहरण के तौर पर कभी-कभी ऐसा होता है कि वर्षा हो गई और सूचना एक घंटे के बाद मोबाइल पर मिल रही है। इस पर डा. महापात्रा ने कहा कि इसके लिए मोबाइल का नेटवर्क या फिर उस कंपनी की नीति जिम्मेदार है कि वह किस सूचना को तवज्जो देती है। इसमें मौसम विभाग की ओर से खामियां नहीं हैं।

धूल भरी हवा भी चली

डा. माहापात्रा ने कहा कि मई इस बार धूल भरी हवा या आंधी का भी गवाह बना जो कि मुख्य रूप से जून में देखने में देखने को मिलता है जब गर्मी चरमोत्कर्ष पर होती है और तापमान भी हाफ सेंचुरी लगाने को बेताब होता है। लेकिन, इस बार मई में ही राजस्थान से चली धूल भरी आंधी एनसीआर तक पहुंच गई। इसके पीछे भी कारण हवा का दबाव कम होना ही है। यह अमूमन दो से तीन घंटे तक ही रहती है और इसकी गति 10 से 100 किमी. प्रतिघंटे तक होती है। ऐसा तब होता है जब हवा की दिशा पश्चिमी-पूर्वी होती है और जब पश्चिमी विक्षोभ उत्पन्न होता है।